एक जैव–अपघटक तकनीक विकसित की है, जो कि फसल अवशेषों को सड़ाने के लिए एक सूक्ष्म जीवाणु कैप्सूल है। किसान 4 कैप्सूल, गुड़ और चने के आटे से 25 लीटर तरल मिश्रण तैयार कर सकते हैं। इसे 8–10 दिनों में किण्वित करें और फिर मिश्रण को खेतों में छिड़कें। यह मिश्रण एक हेक्टेयर भूमि के लिए पर्याप्त है।

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए पूसा डीकंपोजर

यह मिश्रण सामान्य परिस्थितियों में लगने वाले विघटन के समय से लगभग आधे समय (20 दिन) में पराली को विघटित करता है

''भेड़–बकरी अपनाओ''

पवन कुमार माहोर
भाकृअनुप – केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान,
अविकानगर (राजस्थान)
संवादी लेखक का ई–मेल: vatskamal21@gmail.com

बचना है किसानों को आत्महत्या के वार से
ते अपना लो भेड़–बकरी मन की पुकार से
आजीविका का साधन है थोड़े से प्रयास से
आसानी से पाल सकते है थोड़े से अभ्यास से

जो जन है भूमिहीन वो भी पाल सकते है
बहुत कम मेहनत में जीवन निकाल सकते है।
घर में बची हुई दाल–रोटी इनको डाल सकते है।
घर–आंगन की परिस्थिति में आसानी से ढ़ाल सकते है।
भेड़–बकरी के अपशिष्टो से वर्मी कम्पोस्ट बना सकते है।
फसल पैदावार की ताकत उर्वरक से नहीं खाद से जुटा सकते है।

भेड़ पालन से गरीब के हालात बदल जायेंगे
और दुर्गति के दिन प्रगति की ओर मुड़ जायेंगे
गरीब के बच्चे भी घी–दूध खायेंगे
खाते थे जो सूखी रोटी वो घी लगाकर खायेंगे

पाल ली जिसने बकरी और भेड़
मुनाफा देने लगेगी खेत की मेड़
भेड़–बकरी झरबेरी के पत्तों से पाली जावेगी
घास–फूंस और लतायें इनके काम आवेगी।